

---

# Guha AshtakaM

---

## गुहाष्टकम्

---

### Document Information



---

Text title : Guha Ashtakam 2

File name : guhAShTakam2.itx

Category : subrahmanya, aShTaka

Location : doc\_subrahmanya

Proofread by : Sivakumar Thyagarajan Iyer

Description/comments : 4 in Stotrasamuchchaya 1, Edited by Pandit K. Parameshwara Aithal

Latest update : January 2, 2023

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

September 16, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



गुहाष्टकम्



ॐ श्रीमहागणपतये नमः ।

वन्दे भानुसहस्रकोटिसदृशं वन्दे सुरेन्द्रार्चितं  
वन्दे माल्यविभूषितं शिवसुतं वन्दे गुरूणां गुरुम् ।  
वन्दे वेदकदम्बकैरभिनुतं वन्दे मयूरासनं  
वन्दे सिद्धगणाश्रयं प्रतिदिनं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ १ ॥

वन्दे पाटलदामशोभिततनुं वन्दे भवानीसुतं  
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं वन्दे सुरारिद्विषम् ।  
वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलमुखं वन्दे द्विषणेत्रकं  
वन्दे जह्नुसुतासुतं शिवकरं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ २ ॥

वन्दे भक्तजनार्तिहं श्रुतिनुतं वन्दे कुमारं परं  
वन्दे कोमलम्पादपल्लवमहं वन्दे शरादुद्भवम् ।  
वन्दे कृत्तिकमातृकास्तनजपं वन्दे विभुं पावकिं  
वन्दे कुङ्कुमरक्तवर्णमभयं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ३ ॥

वन्दे वज्रधरेण सेवितपदं वन्देऽनलादुद्भवं  
वन्दे दण्डधरेण च प्रविनुतं वन्दे नराशिस्तुतम् ।  
वन्दे पश्चिमदिवपतिस्तुतगुणं वन्दे महत्पूजितं  
वन्दे यक्षकृताश्रयं शिवगुरुं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ४ ॥

वन्दे रोगमहोरगस्य गरुडं वन्दे दयासागरं  
वन्दे तारकसिंहशूरदमनं वन्दे निधीनां निधिम् ।  
वन्दे मन्मथकोटिकोटिसदृशं वन्देऽरविन्दाननं  
वन्दे जारशिखामणिं वरतनुं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ५ ॥

वन्दे वन्दनतत्परा भुवि जना वन्दे कृपालेशतो  
वन्दे यस्य महाधनाः सुनयुता वन्दे भवन्ति स्म तम् ।  
वन्दे दक्षिणदिङ्मुनिप्रियगुरुं वन्दे कलानां निधिं

वन्दे केशवभागिनेयमनिशं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ६ ॥

वन्दे मङ्गलदायकं कलियुगे वन्दे परोक्षस्थितं

वन्दे पालितसर्वलोकनिवहं वन्दे परं दैवतम् ।

वन्दे कुक्कुटकेतनं सुविदुषां वन्दे मुदां दायकं

वन्दे शक्तिधरं शिखीन्द्रगमनं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ७ ॥

वन्दे पातकतूलजालपवनं वन्दे वलारिस्तुतं

वन्दे लोकविमोहनं खलहरं वन्देऽखिलव्यापकम् ।

वन्दे सर्वसुखावहं स्वभजनाद् वन्दे मलध्वंसकं

वन्दे शैलसुतात्मजं सुखकरं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ८ ॥

वन्दे भूतपिशाचशासनपरं वन्दे सदा शाम्भवं

वन्दे घोरभयापमृत्युहरणं वन्दे नराणां गतिम् ।

वन्देऽगाधभवार्षावस्य तरणं वन्दे सुराणां पतिं

वन्दे शाश्वतभक्तिमुक्तिफलदं वन्दे गुहं षण्मुखम् ॥ ९ ॥

इति श्रीगुहाष्टकं समाप्तम् ।

Proofread by Sivakumar Thyagarajan Iyer

---

——  
*Guha AshtakaM*

pdf was typeset on September 16, 2023

——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

